

13. सरदार भगत सिंह

—डॉ० प्रत्यूष गुलेरी

हिन्दु की नहीं है किसी मुस्लिम की नहीं है,
है हिन्द जिसका नाम शहीदों की जमीं है।

किसी शायर की ये पंक्तियां भारत माता के अमर सुपूत सरदार भगत सिंह पर सत्य घटित होती हैं। वे आजादी के उन परवानों में से एक हैं जिन्होंने देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने



प्राणों की बाजी लगा दी। भगत सिंह का जन्म पंजाब में 'लायलपुर ज़िले के बंगा नामक गांव में' एक प्रतिष्ठित सिक्ख परिवार में 27 सितम्बर, 1907 ई० को हुआ था। भगत सिंह के दादा अर्जुन सिंह माने हुए जमींदार थे। सरदार अर्जुन सिंह का पैतृक गांव खटकरकलां था। गांव में प्रवेश करते ही पुराने ढांचे पर खड़ा उनका मकान दूर से ही नज़र आ जाता है। उनका यह पुश्तैनी घर अब पंजाब सरकार के पुरातत्त्व-विभाग के अधीन है।

सरदार अर्जुन सिंह के तीन पुत्र थे :- किशन सिंह, अजीत सिंह, स्वर्ण सिंह। तीनों भाई अपनी देश-भक्ति के लिए खूब प्रसिद्ध थे। अमर शहीद भगत सिंह सरदार किशन सिंह के पुत्र थे। बालक भगत सिंह बचपन से ही बड़े

होनहार थे। एक बार मात्र चार वर्ष की आयु में भगत सिंह अपने पिता के साथ खेतों में गए। खेतों में आम के पौधे लगाए जा रहे थे। भगत सिंह ध्यान से देखते रहे। कुछ देर बाद उन्होंने छोटे-छोटे तिनके ज़मीन में रोपने शुरू कर दिए। पिता ने उन्हें ऐसा करते देख कर प्रेम भाव से पूछा-‘बेटा भगत सिंह यह तुम क्या कर रहे हो?’ भगत सिंह ने तत्काल उत्तर दिया-‘पिता जी बंदूक बो रहा हूँ।’ यह किसे पता था कि बालक भगत सिंह का जीवन आगे चलकर बन्दूकों से ही जुड़ जाएगा।

देश प्यार और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष की भावना इन्हें पारिवारिक-संस्कारों से प्राप्त हुई थी। भगत सिंह के बाल्यकाल में इनके पिता किशन सिंह, चाचा स्वर्ण सिंह तथा अजीत सिंह विदेशी शासन की कारगार में बन्दी रह चुके थे। इन्हीं से प्रेरणा पाकर भगत सिंह क्रान्तिकारियों की अग्रिम पंक्ति में आ गए।

भगत सिंह की प्रारंभिक शिक्षा बंगा के प्राइमरी स्कूल-में हुई थी। स्कूल में वे मेधावी छात्रों में से थे। दयानंद ऐग्लों वैदिक कॉलेज, लाहौर से भगत सिंह ने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। वे अपना पाठ सावधानी से पढ़ते और याद करके सुना देते थे। अपने अध्यापकों का आदर करना

और अपने सहपाठियों से मित्रता का सम्बन्ध जोड़ना ये उनकी सहजात प्रवृत्ति थी।

सन् 1921 ई में जब गांधी जी ने अंग्रेजों के विरुद्ध असहयोग आन्दोलन चलाया तब भगत सिंह दयानंद स्कूल की नौवीं कक्षा में पढ़ रहे थे। उसी समय उन्होंने यह निश्चय कर लिया था कि अब पढ़ाई लिखाई छोड़कर उन्हें इस आन्दोलन में कूद पड़ना चाहिए। कहते हैं इसी समय गोरखपुर में 'चौरी-चौरा काण्ड' हुआ। वहां आन्दोलनकारियों ने पुलिस के 21 सिपाहियों समेत थानेदार को थाने में बन्द कर के ज़िंदा जला दिया। हिंसा की भयानक आग को देखकर गांधी जी ने आन्दोलन स्थगित कर दिया। बालक भगत सिंह को यह अच्छा न लगा।

आन्दोलन ठंडा पड़ा तो भगत सिंह ने नेशनल कॉलेज लाहौर में दाखिला लिया। यहीं इनकी मित्रता भगवती चरण, यशपाल और सुखदेव से हुई। आगे चलकर ये तीनों व्यक्ति सशस्त्र क्रांति में भगत सिंह सहयोगी बने। अभी वे बी. ए. प्रथम वर्ष में थे तो पिता ने उनका विवाह करना चाहा। जब घर से बड़ा दबाव पड़ा तो वे विवाह की तिथि निश्चित होने से पूर्व ही भाग निकले। पिता के लिए इस प्रकार लिखकर छोड़ गए- 'मेरा जीवन तो देश की आज़ादी के लिए समर्पित हो चुका है। मैं सांसारिक सुख की कामना कैसे कर सकता हूँ?' इसी के साथ इनकी पढ़ाई का सिलसिला भी टूट गया।

भगत सिंह लाहौर से सीधे कानपुर पहुँचे। यहां इनकी मुलाकात सुप्रसिद्ध नेता गणेश शंकर विद्यार्थी से हुई। उन्होंने इन्हें अपने पत्र 'प्रताप' के संपादन विभाग में काम दे दिया। अब वे भगत सिंह न रहकर बलवन्त सिंह बन गये थे। प्रताप में वे इसी नाम से लिखते रहे। लाहौर में इन्होंने नवयुवकों के एक क्रांतिकारी संगठन 'नौजवान सभा' का गठन किया था। सन् 1927 में लाहौर के दशहरा मेला की भीड़ में एक बम फेंका गया। इस भीड़ में अनेक लोग घायल हुए। यद्यपि इसमें भगत सिंह का कोई हाथ नहीं था तथापि पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। भगत सिंह की यह पहली गिरफ्तारी थी।

अक्टूबर, 1928 में भारत में इंग्लैंड से साइमन कमीशन आया। यह कमीशन जहाँ भी गया लोगों ने उसका विरोध किया। पंजाब में लाला लाजपत राय के नेतृत्व में भगत सिंह ने भी उसका डटकर बहिष्कार किया। पुलिस ने बड़ी निर्ममता से लाठियां बरसा कर उस आन्दोलन को दबाया। लाठी चार्ज में लाला जी गंभीर रूप से घायल हुए। लगभग एक महीने के बाद 17 नवम्बर, 1928 ई० को लाला जी का निधन हो गया।

भगत सिंह लाला जी की मृत्यु का बदला लेने के लिए तड़प उठे। उन्होंने अपने क्रांतिकारी सहयोगियों से मिलकर एक माह बाद ही साण्डर्स को गोलियों से भून दिया। साण्डर्स सहायक पुलिस अधीक्षक था। इसी ने लाला जी पर लाठी चार्ज कराया था। साण्डर्स पर पहली गोली राजगुरु और दूसरी भगत सिंह ने दागी। 'हिन्दुस्तानी समाजवादी प्रजातंत्र सेना' ने लाहौर की दीवारों पर पोस्टर चिपकाए। पोस्टरों पर लिखा था- 'मनुष्य का खून बहाने के लिए हमें खेद है, परन्तु क्रांति की वेदी पर रक्त बहाना अनिवार्य हो जाता है। हमारा उद्देश्य ऐसी क्रांति से है जो मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का अन्त कर देगी।'

विदेशी शासकों के कान खोलने के लिए सन् 1929 में भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने असेंबली हॉल में बम फेंका। इससे वहां भगदड़ मच गई। इन्होंने अपने आपको पुलिस के हवाले कर दिया। उनका उद्देश्य यहां से भागना नहीं था अपितु विदेशियों के कान खोलना था।

भगत सिंह पर मुकद्दमा चला। उन्होंने अपने बचाव का कोई प्रयत्न नहीं किया। भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त को काले पानी की सजा दी गई। इसी बीच सरकार को पता चल गया कि साण्डर्स की हत्या में भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु तीनों का हाथ था। परिमाणस्वरूप इन तीनों वीर सुपूतों को फांसी की सजा सुनाई गई। 23 मार्च, 1931 को भगत सिंह हँसते-हँसते अपने क्रांतिकारी साथियों राजगुरु और सुखदेव के साथ इन्कलाब जिन्दाबाद, 'भारत माता की जय' के नारे लगाते हुए, फांसी का फन्दा चूमकर उसे अपने ही हाथों से गले में डलकर गाने लगे:

**“दिल से निकलेगी न मर कर वतन की उत्फ्रत,
मेरी मिट्टी से भी खुशबू-ए-वतन आएगी।”**

भारत माता को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त करवाने में सरदार भगत सिंह का बलिदान सदैव-सदैव के लिए स्मरणीय है। शहीदे आज़म भगत सिंह उन देश प्रेमी एवं पराक्रमी वीरों में से थे जो मर कर भी अमर हैं। राष्ट्र उनके बलिदान के लिए हमेशा कृतज्ञ रहेगा।

*** अभ्यास ***

1. भगत सिंह का जन्म कहाँ हुआ ?
2. अमर शहीद भगत सिंह के दादा और पिता का क्या नाम था ?
3. नेशनल कॉलेज लाहौर में भगत सिंह की मित्रता किन-किन देश-भक्तों से हुई ?
4. गणेश शंकर विद्यार्थी के पत्र 'प्रताप' में भगत-सिंह किस नाम से लिखते रहे ?
5. क्रांतिकारी सहयोगियों से मिलकर भगत सिंह ने साण्डर्स को गोलियों से क्यों भून डाला ?
6. फाँसी का फन्दा चूमकर वे क्या गाने लगे ?
7. भगत सिंह के साथ और किसको फाँसी की सजा सुनाई गई थी ?

